भारत-स्वातन्त्र्य-स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थमाला-2

न्याय-वैशेषिक

एक चिन्तन

रामसूर्ति शर्मा

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

पुरोवाक्

योऽनूचानस्स नो महान् के अनुरूप संस्कृत के संरक्षण, संवर्धन तथा प्रचार-प्रसार के लिए सन्नद्ध राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान भारत की स्वातन्त्र्य-स्वर्ण-जयन्ती को विविध शैक्षिक कार्यक्रमों के द्वारा मना रहा है, यह संस्कृतानुरागियों के लिए अपार हर्ष का विषय है। संस्कृत की प्राचीन शास्त्रीय परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने एवं राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में संस्थान का योगदान संस्कृत जगत् में सुविदित है।

भारत की स्वातन्त्र्य-स्वर्णजयन्ती के शुभ अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों के मूर्धन्य मनीषियों द्वारा संस्कृत के विविध शास्त्रों एवं उनमें निहित वैज्ञानिक तत्त्वों पर आधारित महत्वपूर्ण ग्रन्थों को **भारत की स्वातन्त्र्य-स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थमाला** के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

न्याय वैशेषिक : एक चिन्तन नामक यह ग्रन्थ पंजाब विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व इमिरिटस फैलो **प्रोफेसर राममूर्ति शर्मा** द्वारा प्रणीत है। प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रो० शर्मा ने प्रमाण एवं प्रमेय के आधार पर न्याय एवं वैशेषिक दर्शन का तुलनात्मक विवेचन सरल एवं प्रासादिक शैली में प्रस्तुत किया है। न्यायशास्त्र जैसे दुरूह दार्शनिक विषय को सर्वजनसुलभ कराने वाले ऐसे उपादेय ग्रन्थ को अल्प समय में प्रस्तुत करने के लिए संस्थान उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता है।

भारत की स्वातन्त्र्य-स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में संस्थान द्वारा आयोज्यमान विविध शैक्षिक अनुष्ठानों, विशेषतः ग्रन्थमाला के आयोजन, प्रकाशन आदि कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले हमारे सहयोगी डा० सविता पाठक, डा० विरूपाक्ष वि० जड्डीपाल आदि साधुवाद के पात्र हैं।

विषयानुक्रम

भूमिका

न्यायदर्शन १-७०

न्याय दर्शन की मूल चिन्तनदृष्टि

न्यायदर्शन का उदय एवं विकास

न्याय शब्द का अर्थ,

न्यायदर्शन की संक्षिप्त रूपरेखा,

उपनिषदों में न्याय का स्वरूप

प्राचीन एवं नव्य न्याय,

प्राचीन और नव्य न्याय में अन्तर,

न्यायदर्शन के आचार्य एवं साहित्य,

गोतम या गौतम, वात्स्यायन, उद्योतकर, वाचस्पति मिश्र, जयन्त भट्ट, भासर्वज्ञ, उदयनाचार्य, नव्य न्याय के आचार्य एवं साहित्य, रघुनाथ शिरोमणि, मथुरानाथ भट्टाचार्य, जगदीश भट्टाचार्य, गदाधर भट्टाचार्य ।

न्याय-वैशेषिक का मिश्रित योगदान

न्याय दर्शन के प्रमुख सिद्धान्त - षोडश पदार्थ, प्रमाण, प्रत्यक्ष प्रमाण, संनिकर्ष के छः प्रमाण, संयोग संनिकर्ष, संयुक्त समवाय संनिकर्ष, संयुक्त समवेत समवायं, समवाय संनिकर्ष,

समवेत समवाय संनिकर्ष, विशेषण-विशेष्यभावसंनिकर्ष, मानस प्रत्यक्ष, अलौकिक संनिकर्ष, सामान्यलक्षणाप्रत्यासत्ति, ज्ञानलक्षणा प्रत्यासत्ति एवं योगज प्रत्यक्ष । अनुमान प्रमाण, अनुमान की प्रक्रिया, लिङ्गलिङ्गी, पक्ष, सपक्ष, व्याप्ति, व्याप्तिपञ्चक, उपाधिनिरास, अनुमान के भेद, प्रतिज्ञा, हेतु, दृष्टान्त, उपनय, निगमन, समीक्षा, पाश्चात्यपद्धति ।

पञ्चावयव वाक्य के सम्बन्ध में सतीशचन्द्र विद्याभूषण का मत, आगमन तथा निगमन पद्धति, पूर्ववत् अनुमान, शेषवत् अनुमान, सामन्यतोदृष्ट, केवलान्वयीअनुमान, केवलव्यतिरेकी-अनुमान, अन्वयव्यतिरेकी अनुमान, अव्याप्ति, अतिव्याप्ति एवं असंभव दोष, हेत्वाभास, उपमान प्रमाण ।

शब्दप्रमाण—अर्थापत्ति, अभाव, सम्भव तथा ऐतिह्य, प्रामाण्यवाद, परतःप्रामाण्यवाद, कार्यकारणवाद, सत्कार्यवाद । न्यायदर्शन में मोक्ष । निष्कर्षसूत्र ।

वैशेषिक दर्शन ७१-१०७

मूलदृष्टि, वैशेषिक नाम क्यों पड़ा, न्याय एवं वैशेषिक, वैशेषिक न्याय से पूर्ववर्ती है । वैशेषिक सूत्रों का रचना काल, वैशेषिक दर्शन के आचार्य एवं साहित्य, वैशेषिक सूत्र का संक्षिप्त वर्ण्यविषय । प्रशस्तपाद, व्योमशेखराचार्य, श्रीधराचार्य, उदयनाचार्य, वल्लभाचार्य, चन्द्रानन्द, मिथिला-वृत्ति, शङ्कर मिश्र, जगदीश भट्टाचार्य, पद्मनाभ मिश्र, जगदीश तर्कालङ्कार, आत्रेय, विश्वनाथ पञ्चानन, अनं- भट्ट, वैशेषिक की पदार्थमीमांसा, पृथिवी, अप्, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, व्यापार, प्राणापान, निमेषोन्मेष, जीवन, मनोगति, मन, गुण (२४) सामान्य, अपोहवाद, विशेष, समवाय, अभाव, सृष्टि-संहार-प्रक्रिया एवं परमाणुकारणवाद, विद्या एवं

अविद्या, स्वप्नज्ञान, मोक्ष का स्वरूप, समीक्षा एवं निष्कर्ष सूत्र, नैयायिक के पिठरपाक का निराकरण ।

सहायकग्रन्थसूची १०९

अनुक्रमणिका ११३

परिशिष्ट १ १२३

न्यायशास्त्रीयपरिभाषाः

परिशिष्ट २ १४७

पारिभाषिकशब्दलक्षण

परिशिष्ट ३ १५२

न्यायवैशेषिकसूत्रसूची

भी तर्क की न्यूनता नहीं है । इसमें 'वाद' से लेकर, निग्रह स्थान तक की प्रमेय योजना वृहत्तर्क की ही प्रमाण है । परन्तु यह स्वीकार करना होगा कि बौद्धों के साथ हुए प्रतिवाद के फल स्वरूप नव्य-न्याय की तर्क प्रणाली अधिक मुखर एवं आकर्षक है । वस्तुत: तथ्य यह है कि प्राचीन न्याय का लक्ष्य मुक्ति था तथा नव्यन्याय का लक्ष्य एक प्रकार से शुष्क तर्क था ।

न्यायदर्शन के आचार्य एवं साहित्य

गोतम या गौतम

गोतम, इनका गोत्र नाम था । इनका व्यक्तिगत नाम अक्षपाद था । ये मिथिला के निवासी थे । डा. सतीशचन्द्र विद्याभूषण के मतानुसार गोतम एवं अक्षपाद दो आचार्य थे । आचार्य विश्वेश्वर ने भी दोनों को एक न मानकर गोतम को अध्यात्म प्रधान सूत्रों का रचयिता तथा अक्षपाद को प्रमाण विवेचन के साथ न्याय सूत्रों का संस्कर्ता माना है ।[१]

गोतम के न्यायसूत्र के रचनाकाल के सम्बन्ध में विद्वानों के भिन्न भिन्न मत है । इस आधार पर कि न्यायसूत्र के अन्तर्गत शून्यवाद का खंडन किया गया है, याकोबी न्यायसूत्र की रचना तीसरी शताब्दी मानते हैं । किन्तु हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार न्याय सूत्र का प्रणयन द्वितीय शतक में हुआ था । इन मतों से भिन्न, सतीश चन्द्र विद्याभूषण के अनुसार न्याय सूत्र की रचना विक्रमपूर्व षष्ठ शतक में हुई थी ।[२] आधुनिक काल के समालोचक विद्वानों का विचार है कि न्याय सूत्र के चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत शून्यवाद, बाह्यार्थ भंगवाद आदि मतों का खंडन किया गया है जो बौद्धमत की ओर संकेत करते हैं । किन्तु प्राचीन विद्वानों का मत है कि ये वाद बुद्ध से पूर्व आदि सर्ग से ही प्रवृत्त हैं । यह मत जयन्तभट्ट द्वारा प्रतिपादित है ।[३] इस

---

१. देखिये आचार्य विश्वेश्वर, तर्कभाषा की भूमिका ।

२. विशेष देखिए, म.म. गोपीनाथ कविराज, न्यायभाष्य, अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका पृ. १-१८ कलकत्ता

३. आदिसर्गात् प्रभृति वेदवदिमाविद्याः प्रवृत्ताः । न्यायमंजरी

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058